[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 6365 E **Your Roll No................**

Unique Paper Code : 213402

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Sanskrit**

(Admission of 2011 and onwards)

Name of the Paper : Paper XIII (Sanskrit Literature – IV)

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Unless otherwise required in a question, answers should be written either in Sanskrit or in Hindi or in English, but the same medium should be used throughout the paper.
3. Answer **all** questions.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. अन्यथा आवश्यक न होने पर, प्रश्नपत्र के उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, परन्तु सभी प्रश्नों का माध्यम एक ही होना चाहिए ।
3. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की व्याख्या कीजिए : (2×5=10)

Explain any **two** of the following :

(क) स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः ।
सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः ।।

(ख) वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः ।
गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम् ।।

P.T.O.

(ग) व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः ।

प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधा न संवृताङ्गान्निशिता इवेषवः ।।

2. संस्कृत में व्याख्या कीजिए : (8)

Explain in **Sanskrit :**

(क) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।

अथवा / OR

(ख) वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः ।

3. 'किरातार्जुनीयम्' में वनेचर द्वारा वर्णित दुर्योधन की राजनीति का विवेचन कीजिए । (10)

Discuss the governing policy of Duryodhana as described by Vanechara in 'किरातार्जुनीयम्'.

अथवा / OR

महाकवि भारवि की काव्य शैली पर एक निबन्ध लिखिए ।

Write an essay on the poetic style of Bharavi.

4. निम्नलिखित का अनुवाद कीजिए : (2×6=12)

Translate the following :

(क) आस्वादितद्विरदशोणितशोणशोभां
सन्ध्यारुणामिव कलां शशलाञ्छनस्य ।
जृम्भाविदारितमुखस्य मुखात्स्फुरन्तीं
को हर्तुमिच्छति हरेः परिभूय दंष्ट्राम् ।।

अथवा / OR

नेदं विस्मृतभक्तिना न विषयव्यासङ्गमूढात्मना
प्राणप्रच्युतिभीरुणा च न मया नात्मप्रतिष्ठार्थिना ।
अत्यर्थं परदास्यमेत्य निपुणं नीतौ मनो दीयते
देवं स्वर्गगतोऽपि शात्रववधेनाराधितः स्यादिति ।।

(ख) इह हि रचयन्साध्वीं शिष्यः क्रियां न निवार्यते

त्यजति तु सदा मार्गं मोहात्तदा गुरुरंकुशः ।

विनयरुचयस्तस्मात्सन्तः सदैव निरंकुशाः

परतरमतः स्वातन्त्र्येभ्यो वयं हि पराङ्मुखाः ।।

अथवा / OR

अत्युच्छ्रिते मन्त्रिणि पार्थिवे च विष्टभ्य पादावुपतिष्ठते श्रीः ।

सा स्त्रीस्वभावादसहा भरस्य तयोर्द्वयोरेकतरं जहाति ।।

5. निम्नलिखित की सप्रंसग व्याख्या कीजिए : (2×8=16)

Explain with reference to the context :

(क) ये याताः किमपि प्रधार्य हृदये पूर्वं गता एव ते

ये तिष्ठन्ति भवन्तु तेऽपि गमने कामं प्रकामोद्यमाः ।

एका केवलमेव साधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका

नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम ।।

अथवा / OR

कामं नन्दमिव प्रमथ्य जरया चाणक्यनीत्या यथा

धर्मो मौर्य इव क्रमेण नगरे नीतः प्रतिष्ठां मयि ।

तं संप्रत्युपचीयमानमनु मे लब्धान्तरः सेवया

लोभो राक्षसवज्जयाय यतते जेतुं न शक्नोति च ।।

(ख) कृतागाः कौटिल्यो भुजग इव निर्याय नगराद्

यथा नन्दान्हत्वा नृपतिमकरोन्मौर्यवृषलम् ।

तथाहं मौर्येन्दोः श्रियमपहरामीति कृतधीः

प्रकर्षं मद्बुद्धेरतिशयितुमेष व्यवसितः ।।

अथवा / OR

कुले लज्जायां च स्वयशसि च माने च विमुखः
शरीरं विक्रीय क्षणिकमपि लोभाद्धनवति ।
तदाज्ञां कुर्वाणो हितमहितमित्येतदधुना
विचारातिक्रान्तः किमिति परतन्त्रो विमृशति ।।

6. 'मुद्राराक्षसम्' नाटक में 'कृतककलह' के महत्त्व का विवेचन कीजिए । (10)

Discuss the importance of 'कृतककलह' in the play 'मुद्राराक्षसम्'.

अथवा / OR

'मुद्राराक्षसम्' नाटक के आधार पर चाणक्य का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

Discuss the character of 'चाणक्य' on the basis of the play 'मुद्राराक्षसम्' ।

7. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : (3×3=9)

Write short notes on any **three** of the following :

सूत्रधार, नान्दी, प्रस्तावना, भरतवाक्य, जनान्तिकम्